पाठ - 34

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

"रात्रि आधी से अधिक बीत चुकी थी। एक युवक बिस्तर पर परेशान-सा करवटें बदल रहा था। दूर-दूर तक आँखों में नींद न थी। उसे कानों में राष्ट्रीय नेता गोखले के शब्द बार-बार गूँज उठते "याद रखो, युवकों, देश का भी तुम पर अधिकार है .....तुम जैसे लोगों पर उसका अधि्कार और भी अधिक है।"

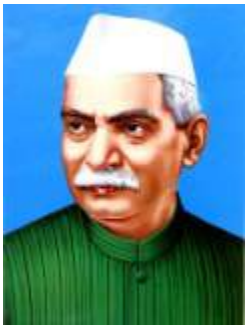

मातृभूमि विदेशी शासन में जकड़ी हुई थी और उसे उनकी जरूरत थी। वह भारत-माता की पुकार कैसे अनसुनी कर सकते थे? परंतु उनकी माता जी और बड़े भाई साहब को यह पसंद नहीं था। राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी बात पत्र के माध्यम से बड़े भाई साहब तक पहुँचायी-"मैं आपके सामने ये बातें न कर सका। आप को कठिनाई में डालना मुझे शोभा नहीं देता। आपने मुझसे बड़ी-बड़ी आशाएँ बाँध रखीं हैं। वे सब एक क्षण में नष्ट हो जायेंगी। मेरी यदि कुछ महत्त्वाकांक्षा है तो वह यही है कि मैं भारत-माता की कुछ सेवा कर सकूँ।"

राजेन्द्र प्रसाद को बचपन की जो सबसे पहली घटना याद है वह अपने हिन्दू और मुसलमान दोस्तों के साथ कबड्डी और दूसरे खेल खेलने की है। उन्हें गाँव के मठ में रामायण सुनना और स्थानीय रामलीला देखना बड़ा अच्छा लगता था। उनमें चरित्र की दृढ़ता और

उदार दृष्टिकोण की आधारशिला बचपन में ही रखी गई थी। वे बचपन से ही बड़े सौम्य और होनहार थे। उनके स्कूल के दिन परिश्रम और मौजमस्ती के मिश्रण थे।

उन दिनों यह परम्परा थी कि शिक्षा का आरंभ फारसी की शिक्षा से किया जाए। राजेन्द्र प्रसाद पाँच या छः वर्ष के रहे होंगे, जब उन्हें और उनके दो चचेरे भाइयों को एक मौलवी साहब पढ़ाने के लिए आते थे। लड़कों ने अपने अच्छे स्वभाव वाले मौलवी साहब के साथ शैतानियाँ भी की मगर मेहनत भी बहुत की। वे सुबह बड़ी जल्दी उठकर अध्ययन कक्ष में पढ़ने के लिए बैठ जाते। यह सिलसिला काफी देर समय चलता। वास्तव में यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि इतने छोटे बच्चे बहुत देर तक ध्यान लगाकर पढ़ाई कर सकेगें। यह विशेष गुण जीवन पर्यन्त उनमें रहा और इसी गुण ने राजेन्द्र प्रसाद को विशिष्टता भी दिलायी। उन्होंने अपने शैक्षिक जीवन की सभी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1915 ई0 में कानून परीक्षा में वे पाँच प्रान्तों में प्रथम आए। मेधावी छात्र होने के कारण उन्हें अनेक छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हुईं।

उनके बारे में कहा जाता है कि जिस कक्षा की उन्हें परीक्षा देनी होती थी, वह उसके आगे की कक्षा की भी पुस्तकें पढ़ा करते थे।

विद्यार्थी जीवन से ही डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद अनेक सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लिया करते थे। उन्होंने कोलकाता के 'प्रेसीडेन्सी कॉलेज' की सभाओं में लगन एवं उत्साह से भाग लिया। वे जिस काम को हाथ में लेते, उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। सन् 1906 में उन्होंने बिहारी युवा छात्रों को संगठित कर उनका नेतृत्व किया।

शिक्षा-दीक्षा के बाद.....

- मुज़फ्फर नगर के एक कॉलेज में अध्यापन कार्य
- कोलकाता विश्वविद्यालय के लॉ-कॉलेज में प्रोफेसर
- पटना हाईकोर्ट में वकालत

पटना हाईकोर्ट में वकालत में उन्हें खूब सफलता मिली। उनकी जितनी आमदनी होती थी, उसमें गरीब विद्यार्थियों का हिस्सा अवश्य होता था। वह अपनी आमदनी का अधिकांश भाग प्रायः गरीब विद्यार्थियों की सहायता में खर्च करते थे। संयोग से इन्हीं दिनों बंगाल में स्वदेशी आन्दोलन चल रहा था। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्रता प्रेमी थे। अतः देश

की सेवा के लिए उन्होंने वकालत की आमदनी से मुँह मोड़ लिया और वह स्वदेशी आन्दोलन में शामिल हो गए।

उन्हें अपनी नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित करने का वास्तविक अवसर सन् 1917 ई0 में 'चम्पारन सत्याग्रह' में मिला। यह भारत का प्रथम किसान आन्दोलन था। यहीं से उनके राजनैतिक और राष्ट्रीय जीवन का शुभारम्भ हुआ। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध नील की खेती करने वालों ने आन्दोलन किया। जिसका नेतृत्व गांधी जी ने किया। यह आन्दोलन इतना प्रचण्ड और प्रखर था कि अंग्रेजों को इसके आगे घुटने टेकने पड़े। इस आन्दोलन ने डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद और बिहार को सारे देश में ख्याति दिलायी। इस सत्याग्रह के अवसर पर ही गांधी जी से डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की भेंट हुई थी।

"बापू बहुत ही दूरदर्शी हैं, इसलिए मैंने अपने दृष्टिकोण को उनके सामने रखना नियम बना लिया है। यदि उन्होंने उसको मान लिया तो ठीक है, वरना मैं उनकी सलाह को स्वीकार कर लेता हूँ।"

-डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्मकथा से'

गांधी जी से भेंट के बाद डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद उनके अनुयायी बन गए। वे सत्य और अहिंसा के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए। परिस्थितियाँ कैसी भी हों उन्होंने अपनी सज्जनता और सरलता को कभी नहीं छोड़ा। उनके इन्हीं गुणों के कारण गांधी जी भी उन्हें हृदय से प्यार करते थे।

सन् 1934 ई0 में बिहार भूकम्प के समय डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी बेजोड़ संगठन-शक्ति का परिचय दिया। भूकम्प की विभीषिका से बिहार की जनता तिलमिला रही थी। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद से यह पीड़ा देखी नहीं गईं वह बीमार थे लेकिन अपनी बीमारी की चिन्ता न कर वह सहायता कार्य में लग गए। वह उन लोगों के लिए जिनके घर नष्ट हो गए थे, भोजन, कपड़ा और दवाइयाँ इकट्ठी करते।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की सरलता, सादगी और समाज सेवा की घटनाएँ अनेक हैं। अपने को विशिष्ट या अन्य लोगों से अलग समझने की भावना उनमें कभी नहीं रही। एक अवसर पर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद पटना से दरभंगा जा रहे थे, उस समय अत्यंत भयानक गर्मी थी। रास्ते में सोनपुर स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो लोग प्यास से बुरी तरह त्राहि-त्राहि कर रहे थे। कुछ ही दिन पूर्व आये भूकम्प के कारण स्टेशन के नल की व्यवस्था नष्ट हो चुकी थी। एक छोटा सा प्याऊ था, जहाँ पर बैठा अकेला व्यक्ति सब की आवश्यकता पूरी नहीं कर पा

रहा था। उन्होंने तत्काल अपना लोटा उठाया और पानी भर-भर के लोगों को पिलाने लगे। लोग उन्हें आवाज़ देते 'ए पानी - इधर पानी लाना!'' और यह सुनकर डॉ0 प्रसाद उधर ही दौड़ पड़ते। कहीं कोई संकोच या झिझक नहीं। अपनी समाज सेवा से डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को देशव्यापी ख्याति मिली। वह महात्मा गांधी तथा पण्डित जवाहर लाल नेहरू की तरह देश के अग्रणी नेता बन गए। सन् 1934 ई0 में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।

उनके रोम-रोम में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, निर्भीकता, देशभक्ति एवं सहिष्णुता व्याप्त थी। उनकी देशभक्ति, अमूल्य त्याग और सच्चाई के लिए भारत की जनता ने उन्हें 'देशरत्न' की उपाधि दी। सन् 1950 ई0 में संविधान सभा ने उन्हें स्वतंत्र भारत का राष्ट्रपति चुना। बाद में सन् 1952 ई0 में आम चुनावों के बाद वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। वे सन् 1962 ई0 तक लगातार दो बार भारत के प्रथम राष्ट्रपति रहे। राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए वे दस हजार रुपये के वेतन के स्थान पर केवल दो हजार आठ सौ रुपये वेतन लेते थे। बारह वर्षों के लिए राष्ट्रपति भवन उनका घर था।

राष्ट्रपति भवन में पहुँचकर भी डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की सरलता, सादगी, और भारतीय संस्कृति के प्रति गहन आस्था में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आई। अपने व्यक्तिगत मित्रों और परिचितों का स्वागत वे अपने पारम्परिक तरीके से ही करते थे। उन्होंने एक बार संसद सदस्य श्रीमती सुमित्रा कुलकर्णी और उनके पति श्री गजानन को अपने यहाँ भोजन के लिए आमंत्रित किया।

इसका वर्णन करते हुए श्रीमती कुलकर्णी ने लिखा है-"मैं सोचती थी हम लोग पाश्चात्य ढंग से औपचारिक भोज पर जा रहे हैं मगर भोजन के लिए राजेन्द्र बाबू हमें एक छोटे से भोजन के कमरे में ले गए। वहाँ गोल मेज पर हम तीनों के लिए थालियाँ लगी थीं और राजवंशी देवी (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी की पत्नी) हमारा भोजन गरम कर रही थीं और परोस रही थीं। मैं और गजानन जी राजेन्द्र बाबू की सरलता पर चकित थे।"

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को सामान्यतः कभी क्रोध नहीं आता था और न ही कभी आवेश में आकर किसी को भला बुरा कहते थे। यदि कभी ऐसा हो जाता तो बाद में क्रोध शान्त होने पर बड़े दुखी होते और उसका पश्चाताप करते।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद का एक पुराना नौकर था तुलसी। जब वे राष्ट्रपति भवन में रहते थे तब एक दिन उनके कमरे की सफाई करते हुए तुलसी से हाथी दाँत का पेन डेस्क (मेज) से गिर कर टूट गया। स्याही कालीन पर फैल गई। राजेन्द्र प्रसाद बहुत गुस्सा हुए। यह पेन किसी की भेंट थी। उन्हें बहुत प्रिय भी थी। उन्होंने तुरन्त तुलसी को अपनी निजी सेवा से

हटा दिया। उस दिन व्यस्तता के बावजूद उनके दिल में एक काँटा सा चुभता रहा। उन्हें लगा उन्होंने तुलसी के साथ अन्याय किया है। उन्होंने शाम को तुलसी को अपने कमरे में बुलाया। तुलसी डरता हुआ भीतर आया। उसने देखा कि राष्ट्रपति सिर झुकाए और हाथ जोड़े उसके सामने खड़े हैं। उन्होंने धीमे स्वर में कहा ‘‘तुलसी मुझे क्षमा कर दो।’’ तुलसी इतना चकित हुआ कि उससे कुछ बोला नहीं गया। राष्ट्रपति ने फिर नम्र स्वर में दोहराया ‘‘तुलसी, तुम क्षमा नहीं करोगे क्या ?’’ इस बार सेवक और स्वामी दोनों की आँखों में आँसू आ गए।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की स्मरण शक्ति अत्यंत तीव्र थी। एक बार अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में एक प्रस्ताव पेश किया जाना था, जो कहीं खो गया। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को पता चला तो उन्होंने पूर्ण आत्मविश्वास से कहा-“चिन्ता न करें मैं उसे फिर तैयार कर देता हूँ।” उन्होंने स्मरण शक्ति के आधार पर जो प्रस्ताव तैयार किया वह मूल से पूर्णतः मिलता था। इसकी पुष्टि सबने की।

आज हिंदी भाषा के अनन्य पुजारी के रूप में भी उन्हें याद किया जाता है। उन्होंने हाई स्कूल तक हिंदी माध्यम से शिक्षा दिलाने तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी को सर्वोच्च स्थान दिलाने के लिए अनेक उपाय किए। हिंदी को राजभाषा बनाने का श्रेय डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को ही जाता है। इसके साथ ही वह मानते थे कि यदि हमें आधुनिक विश्व के साथ अपनी गति बनाए रखनी है तो अंग्रेजी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उन्होंने स्वयं भी कई ग्रंथ लिखे।

सन् 1962 ई0 में राष्ट्र ने उन्हें ‘भारत रत्न’ की सर्वश्रेष्ठ उपाधि से सम्मानित किया।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ.....

- आत्मकथा
- इण्डिया डिवाइडेड
- बापू के कदमों में
- संस्थापक ‘लॉन्वीकली’
- •चम्पारन में सत्याग्रह
- •महात्मा गांधी एवं बिहार, सम रेमिनिसन्सेज
- •सम्पादन ‘साप्ताहिक देश’

अपने जीवन के आखिरी समय को बिताने के लिए उन्होंने पटना के निकट सदाकत आश्रम को चुना। यहीं पर 28 फरवरी 1963 ई0 में उनका देहान्त हुआ।

अभ्यास

1. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने वकालत क्यों छोड़ी ?

2. 'चम्पारन सत्याग्रह' कब और क्यों किया गया ?

3. उन घटनाओं का उल्लेख कीजिए जिससे डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की देश-भक्ति व देश-सेवा का पता चलता है।

4. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व के किन गुणों ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया उनकी सूची बनाइए।

5. पेन टूटने वाली घटना क्या थी? इससे डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के किस गुण का पता चलता है ?

6. निम्नलिखित में सही वाक्यों के सामने सही (झ्) तथा गलत के सामने गलत (ग्) का चिह्न लगाइए।

क. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने वकालत से मुँह मोड़ लिया क्योंकि इसमें आमदनी कम थी। ( )

ख. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद एक सफल किसान थे और अंत में देश के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। ( )

ग. अपने विद्यार्थी जीवन से ही डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लिया करते थे। ( )

7. निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:-

- उन्होंने बिहारी युवा छात्रों को संगठित किया।
- डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद गांधी जी के अनुयायी बन गए।
- चम्पारन सत्याग्रह।
- वे अपने हिन्दू और मुसलमान दोस्तों के साथ 'कबड्डी' खेलते थे।
- वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए।

8. देश के किसी अन्य राष्ट्रपति के विषय में जानकारी इकट्ठी कीजिए और लिखिए।

योग्यता विस्तार -

- ‘भारत रत्न’ से सम्मानित भारत के सभी राष्ट्रपतियों की सूची बनाइए।